

# अरविन्द गुप्ता-जिसने बच्चों में उम्मीद के बीज बोए



बाबा मायाराम*

**शिक्षा के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने के लिए अरविन्द गुप्ता अपने तईं प्रयासरत हैं। वे शिक्षक, इंजीनियर और वैज्ञानिक हैं। सबको पढ़वाने के लिए उनकी वेबसाइट लोकप्रिय है। वे बच्चों, शिक्षकों में उम्मीद जगाते हैं। उनमें उम्मीद के बीज बोते हैं। यह आलेख अरविन्द गुप्ता के व्यक्तित्व और शिक्षा जगत में किये कामों की बानगी प्रस्तुत करता है-**

विज्ञान और गणित ऐसे विषय हैं, जिनमें बच्चे अक्सर पिछड़ जाते हैं। ऐसे में हमें अरविन्द गुप्ता से मदद मिल सकती है। पिछले चार दशकों से अरविन्द गुप्ता गरीब बच्चों के लिए **कबाड़ से खिलौने** बनाकर गणित और विज्ञान की शिक्षा देने के लिए जाने जाते हैं। वे अब तक पंद्रह सौ से ज्यादा खिलौने बना चुके हैं, उन्होंनें हजारों वीडियो बनाए हैं।

इन मजेदार खिलौने से विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए वे 20 देशों के तीन हजार से ज्यादा स्कूलों में कार्यशालाएं कर चुके हैं। अब तक लाखों विद्यार्थी उनके बनाए खिलौनों से लाभान्वित हो चुके हैं। यू ट्यूब पर उनके वीडियो सवा पांच करोड़ लोग देख चुके हैं जो एक रिकार्ड है। उनकी वेबसाईट (-arvindguptatoys-com) से रोज 15 हजार किताबें मुफ्त डाउनलोड होती है।

अरविन्द गुप्ता ने कानपुर आईआईटी से इंजीनियरिंग से बीटेक किया है। शुरू में उन्होंनें पुणे में टाटा मोटर्स में काम किया, लेकिन वहां उनका मन नहीं लगा। वे अपने जिंदगी के मायने ढूंढ रहे थे।

उस समय चीनी कवि **लाओ त्सु** की कविता एक नारे की तरह प्रचलन में थी। चीनी कवि लाओ त्सु की कविता है, जो 70 के दशक में एक नारा बन गई थी।

***लोगों के बीच जाओ और रहो,***
***उनसे प्यार करो और सीखो,***
***वे जो जानते हैं, वहां से शुरू करो***
***जो उनके पास है उसे ही आगे बढ़ाओ।***

अरविन्द गुप्ता भी इससे बहुत प्रभावित थे। कुछ सार्थक करने की तलाश में मध्यप्रदेश में होशंगाबाद जिले के एक गांव में आ पहुंचे, जहां **किशोर भारती** संस्था स्कूली शिक्षा में विज्ञान शिक्षा पर काम कर रही थी। होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़कर उन्होंनें छह महीने काम किया। यही वह मोड़ है, जहां से उनकी जिंदगी की दिशा बदल गई। किशोर भारती के पास 7 किलोमीटर दू एक छोटा कस्बा बनखेड़ीह है वहां शुक्रवार को साप्ताहिक बाजार लगता है। सड़क के किनारे दुकानें लगती है वहां से वे छोटी-मोटी सस्ती चीजें खरीदते थे और उनसे खिलौने बनाते थे और उसके पीछे के विज्ञान को बच्चों को समझाते थे।

साइकिल के पहिए में लगने वाले वाल्व ट्यूब, माचिस की तीली, कचरे में पड़ा वायर या बोतल, झाड़ू की सींक जैसे सामानों से वे खिलौने बनाते थे। उन्हें इस काम में टेल्को में ट्रक डिजाइन करने से ज्यादा मजा आया और इससे कई गरीब बच्चों का बचपन खिलौनों से महरूम होने से भी बच गया।

वे कहते हैं कि किसी बात को समझने के लिए पहले बच्चों को अनुभव की जरूरत होती है। अनुभव में चीजों को देखना, सुनना, छूना, चखना, सूंघना आदि कुशलताएं शामिल है। वे हमेशा ठोका-पीटी कर - करके कुछ बनाते रहते हैं।



बच्चों में नया कुछ करने की हमेशा चाहत रहती है। वे बताते हैं कि कुछ समय के लिए वे छत्तीसगढ़ में लोहे की खदानों में काम करने वाले मजदूरों के बीच गए थे। वहां लोहा पत्थर ढोने के लिए डम्पर ट्रक चलते थे। वहां के बच्चे दो माचिस की डिब्बियों की मदद से वह डम्पर ट्रक बनाकर खेल रहे थे। उसमें लेबर का काम करने के लिए तीली का इस्तेमाल किया गया था। इसे देखकर अरविन्द जी आश्चर्यचकित हुए और उन्होंनें इसे अपनी खिलौनों की सूची में *'माचिस का डम्पर ट्रक'* शामिल कर लिया।

इस सब प्रयोगों पर आधारित उन्होंने वर्ष 1984 में मैचिस्टिक मॉडल एण्ड अदर साइंस एक्पेरिमेंट्स बुक लिखी। अब यह किताब 12 भाषाओं में है। इसके बाद उन्होंने 25 किताबें और लिखी। इसे बाद वे पुणे में आयुका *(द इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर फार एस्ट्रोनोमी एंज एस्ट्रोफिजिक्स, पुणे)* में बाल-विज्ञान केन्द्र के को-आर्डिनेटर बने। वहां हर दिन वे नए-नए खिलौने बनाते थे, फिर उनकी वीडियो बनाते थे।

इसके अलावा दुनिया के अच्छे बाल साहित्य और शिक्षा की किताबों का हिन्दी अनुवाद करके और उनकी पीडीएफ बनाकर अपनी वेबसाइट पर डालते हैं। हर दिन 7 से 8 घंटे यही काम करते हैं। देश के लगभग 7 राज्यों में हिन्दी बोलने वाले 40 करोड़ लोग हैं। फिर भी हिन्दी में शैक्षणिक और बाल साहित्य उतना समृद्ध नहीं है है इस काम को करने में रात दिन जुटे रहते हैं।

अरविन्द गुप्ता कहते हैं कि मेरी जिंदगी का एक ही मकसद है कि मैं न केवल देश बल्कि पूरी दुनिया के बच्चों को किताबें, वीडियो, मेरे बनाए खिलौनों को बनाना सीखने के तरीके मुफ्त में उपलब्ध करा

*सामाजिक कार्यकर्ता एवं लेखक, पिपरिया (म.प्र.)

सकूं, ताकि ज्ञान पाने के रासत में गरीबी या संसाधनों की कमी आड़े न आये, अभी वेबसाइट पर साढ़े हजार किताबें भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। वे अब तक 220 किताबों का अनुवाद कर चुके हैं।

उनकी चिंता है कि हमारे देश में बल्कि दुनिया के कई देशों में गरीबी के चलते बच्चे खिलौने खरीद नहीं सकते। जब से कचरे या बेकार सामान से अपने खिलोने खुद बनाकर खेलते हैं। तो इससे उनहें बेहत खुशी होती है। भारत में खिलौने बनाने की एक परंपरा पुरानी रही है। परंपरागत खिलौने फेंकी हुई वस्तुओं को दुबारा इस्तेमाल करके बनते हैं, इसलिए वे सस्ते और पर्यावरण मित्र होते हैं। इस प्राचीन परंपरा के बारे में वे बुद्ध की कहानी सुनाते हैं।

एक दिन बुद्ध अपने मठ में मठवासियों के साथ बैठे बात कर रहे थे। तभी एक भिक्षु ने नए अंगरखे के लिए इच्छा जताई। बुद्ध ने पूछा। तुम्हारे पुराने अंगरखे का कया हुआ? 'वह बहुत फटा पुराना हो गया है। इस लिए मैं उसे अब चादर के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूँ।' बुद्ध ने फिर पूछा - पर तुम्हारी पुरानी चादर का क्या हुआ?

'गुरू जी वह चादर पुरानी हो गई थी, वह इधर-उधर से फट गई थी, इस लिए मैंने उसे फाड़कर तकिया का खोल बना लिया।' भिक्षु ने कहा।

बेशकर तुमने तकिया का नया खोल बना लिया, लेकिन तु ने तकिया के पुराने खोल का क्या किया? बुद्ध ने पूछा-

'गुरू जी' तकिये का गिलाफ सर घिस- घिस कर फट गया था और उसमें एक बड़ा छेद हो गया था। इसलिए मैंने पायदान बना लिया।

बुद्ध हर चीज की गहराई से तहकीकाम करते थे। उस जवाब से भी वे संतुष्ट नहीं हुए।

'गुरू जी पायेदार भी पैर रगडते रगडते फट गया। एकदम तार तार हो गया। तब मैंने उसके रेशे इकट्ठे करके उनकी एक बाती बनाई। फिर उस बाती कासे तेल के दीये में डाल कर जलाया।'

भिक्षु की बात सुनकर बुद्ध मुस्कराए। फिर उस सुपात्र को बुद्ध ने एक नया गरम अंगरखा दिया।

यह कहानी आज भी प्रासंगिक है। क्योंकि उपभोक्तावादी संस्कृति इस्तेमाल करो और फेंको (यूज एण्ड थ्रो) की संस्कृति को बढावा देती है। जिससे चीजों के प्रति अथाह चाह जगती है और पैसों की और जीवन के बहुमूल्य समय की बर्बादी होती है। और जीवन में सार्थक करने की बजाए चीजों को बटोरने में जिंदगियां लग जाती है।

*...पृष्ठ-8 का शेष-***उद्योग, उद्यमी, उद्यमिता...**

समर्थ हैं। आज तक देश ने **जे.आर.डी. टाटा** जैसे केवल एक भारत रत्न पैदा किया तथा पद्म विभूषण की मात्रा तो मालूम नहीं, लेकिन सीमित है। उसी तरह पद्म भूषण एवं पद्मश्री संख्या सीमित है। *उद्यमियों को चोर, बेइमान, कालाबाजारी मानकर बदनाम करने का प्रयास बंद करें। जहाँ तक बेइमानी का सवाल है कौन सा वर्ग छूटा है। आप चाहे राजनीतिज्ञों, नौकरी पेशा वाले एवं सभी वर्गों को देख लें, सब जगह गलतियाँ मिलेंगी, लेकिन बदनाम उद्यमी एवं व्यापारी ज्यादा होता है।* सरकार ने संगीत के क्षेत्र में सर्वाधिक भारत रत्न एवं अन्य अलंकरण दिये हैं। उसी तरह राजनीतिज्ञों को भी अलंकरण देने में उदारता दिखाई है। अलंकरण प्राप्त उद्यमी व्यापारी बहुत कम हैं। सरकार इस पर सोचे और उन्हें सम्मानजनक दृष्टि से देखें।

5. सफल उद्यमियों को सरकार अपना सलाहकार बनाये, ताकि सरकारी पैसों का दुरुपयोग रुके एवं सरकारी राजस्व का सही उपयोग बढ़े।

हमने उद्योग, उद्यमी और उद्यमिता को अलग-अलग परिभाषित करने का प्रयास किया है, लेकिन हैं तीनों एक ही उद्यमी से सम्बन्धित कारण उद्यमी ही उद्योग लगायेगा तथा उसमें ही जब उद्यमिता होगी, तो अपने उद्योग को सफलतापूर्वक चलाने में सक्षम होगा। उद्योगों के महत्व एवं सरकार को सुझाव अलग से दिये गये हैं। ■

*...पृष्ठ-29 से आगे-***रक्षा विनिर्माण उद्योग...**

आधार पर 49 प्रतिशत से अधिक एफडीआई की भी अनुमति है। इसके अलावा स्वत: मार्ग के अंतर्गत 24 प्रतिशत तक विदेशी पोर्टफोलियो निवेश की अनुमति है।

अप्रैल 2000 से मई 2015 के दौरान कुल 5.02 मिलियन यूएस डॉलर के एफडीआई अंतर्वाह उद्योग मंत्रालय में प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा, रक्षा इलेक्ट्रोनिक्स में उत्पादों सहित रक्षा क्षेत्र में कुल 34 विदेशी निवेश प्रस्ताव भी अनुमोदित किए गए हैं।

**भावी संभावनाएँ:** रक्षा कार्यक्रम के स्वदेशीकरण के लिए भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' नीति से घरेलू रक्षा उद्योग को लाभ मिलने की उम्मीद है। रक्षा उपकरणों का एक प्रमुख आयातक होने के नाते भारत के पास अपने रक्षा क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने के लिए तमाम अवसर हैं। इस क्षेत्र में निजी कंपनियों की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। इससे रक्षा विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना और संयुक्त उद्यम गठित करने तथा आधुनिकतम प्रौद्योगिकियाँ प्राप्त करने संबंधी अवसर उत्पन्न होंगे। इलेक्ट्रोनिक्स सेगमेंट के लिए लाभकर होंगी।

अत: इस अनूठे क्रेता एकाधिकार वाले उद्योग में रक्षा उपकरणों की जब माँग बढ़ेगी, तो भारत सरकार, जो क्रेता तथा विनियामक दोनों हैं, द्वारा हाल की सकारात्मक पहलों से निवेश तथा घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन मिलने की आशा है। ■

## कार्टून कौतुकम्

